ईकाई 22 अधिगम अक्षमता: अर्थ, विशेषता एवं वर्गीकरण

संरचना

22.1 प्रस्तवाना

22.2 उद्देश्य

22.3 अधिगम अक्षमता: एक परिचय

22.3.1 अधिगम अक्षमता का अर्थ और परिभाषा

22.3.2 ऐतिहासिक परिदृश्य

22.3.3 अधिगम अक्षमता की प्रकृति एवं विशेषताएँ

22.4 अधिगम अक्षमता का वर्गीकरण

22.5 अधिगम अक्षमता और अन्य विकलांगता

22.5.1 अधिगम अक्षमता और मानसिक मंदता

22.5.2 अधिगम अक्षमता और स्लो लर्नर्स व पिछड़े बालक

22.6 सारांश

22.7 शब्दावली

22.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

22.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

22.10 सहायक/उपयोगी पाठ्यसामग्री

22.11 निबंधात्मक प्रश्न

22.1 प्रस्तावना

आज शिक्षा के सार्वभौमीकरण के प्रयास के तहत विशिष्ट शिक्षा के संप्रत्यय को बल मिला है लेकिन लोगों में अभी भी जागरुकता का अभाव है। विशिष्ट बालक कौन है और विशिष्टता के कितने प्रकार हैं, इस संदर्भ में या तो लोगों को जानकारी ही नहीं है या फिर अपूर्ण जानकारी है। विशिष्ट बालक के मुख्य प्रकार जैसे अस्थि विकलांगता, श्रवण विकलांगता, दृष्टि विकलांगता आदि में तो फिर भी लोग अंतर कर लेते हैं लेकिन मानसिक मंदता, अधिगम अक्षमता, पागलपन आदि की जानकारी उन्हें नहीं है। भ्रमवश वे इन सबको एक ही अर्थ में समझते हैं तथा एक ही अर्थ में प्रयोग करते हैं। यह बहुत गंभीर समस्या है। अधिगम अक्षमता के साथ ऐसा अधिकांशतः होता है।

हर प्रकार के विशिष्टता की अपनी प्रकृति होती है और उस प्रकृति के अननुकूल हीं हमें शिक्षण अधिगम-प्रक्रिया अपनानी पड़ती है। अतः, यह आवश्यक है कि हम विशिष्ट बालकों के विभिन्न प्रकार को जाने एवं समझें। इसी क्रम में, इस इकाई में हम विशिष्ट बालकों के एक प्रकार, अधिगम अक्षमता की परिभाषा, प्रकृति लक्षण, विभिन्न प्रकार एवं विशिष्ट बालकों के अन्य प्रकार से अंतर की चर्चा करेंगे।

22.2 उद्देश्य

इस ईकाई के अध्ययन के पश्चात आप:

- अधिगम अक्षमता की परिभाषा, प्रकृति, विशेषता की व्याख्या कर सकेंगे;
- अधिगम अक्षमता के विभिन्न प्रकार का वर्णन कर सकेंगे;
- अन्य प्रकार की विकलांगताओं एवं अधिगम अक्षमता में अंतर कर सकेंगे।

22.3 अधिगम अक्षमता: एक परिचय

22.3.1 अधिगम अक्षमता का अर्थ और परिभाषा

"अधिगम अक्षमता" पद दो अलग-अलग पदों "अधिगम" और "अक्षमता" से मिलकर बना है। अधिगम शब्द का आशय "सीखने" से है तथा "अक्षमता" का तात्पर्य "क्षमता के अभाव" या "क्षमता की अनुपस्थिति" से है। अर्थात् सामान्य भाषा में "अधिगम अक्षमता" का तात्पर्य "सीखने की क्षमता अथवा योग्यता" की कमी या अनुपस्थिति से है। सीखने में कठिनाइयों को समझने के लिए हमें एक बच्चे की सीखने की क्रिया को प्रभावित करने वाले कारकों का आकलन करना चाहिए। प्रभावी अधिगम के लिए.मजबूत अभिप्रेरण, सकारात्मक आत्म छवि, और उचित अध्ययन प्रथाएँ एवं रणनीतियाँ आवश्यक शर्तें हैं (एरो, जेरे-फोलोटिया, हेन्गारी, कारिउकी तथा म्कानडावायर, 2011)। औपचारिक शब्दों में, "अधिगम अक्षमता" को "विद्यालयी पाठ्यक्रम" सीखने की क्षमता की कमी या अनुपस्थिति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

"अधिगम अक्षमता" पद का सर्वप्रथम प्रयोग 1963 ई. में सैमुअल किर्क द्वारा किया गया था और इसे निम्न शब्दों में परिभाषित किया था-

"अधिगम अक्षमता को वाक्, भाषा, पठन, लेखन या अंकगणितीय प्रक्रियाओं में से किसी एक या अधिक प्रक्रियाओं में मंदता, विकृति अथवा अवरुद्ध विकास के रुप में परिभाषित किया जा सकता है, जो संभवत: मस्तिष्क कार्यविरुपता और/या संवेगात्मक अथवा व्यावहारिक विक्षोभ का परिणाम है न कि मानसिक मंदता, संवेदी अक्षमता अथवा सांस्कृतिक या अनुदेशन कारक का। (किर्क,1963)

इसके पश्चात से अधिगम अक्षमता को परिभाषित करने के लिए विद्वानों द्वारा निरंतर प्रयास किए गए, लेकिन कोई सर्वमान्य परिभाषा विकसित नहीं हो पाई।

अमेरिका में विकसित फेडरल परिभाषा के अनुसार, "विशिष्ट अधिगम अक्षमता को, लिखित एवं मौखिक भाषा के प्रयोग एवं समझने में शामिल एक या अधिक मूल मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया में विकृति, जो व्यक्ति के सोच, वाक्, पठन, लेखन, एवं अंकगणितीय गणना को पूर्ण या आंशिक रुप में प्रभावित करता है, के रुप में परिभाषित किया जा सकता है। इसके अंतर्गत इन्द्रियजनित विकलांगता, मस्तिष्क क्षति, अल्पतम असामान्य दिमागी प्रक्रिया, डिस्लेक्सिया, एवं विकासात्मक वाच्चाघात आदि शामिल है। इसके अंतर्गत वैसे बालक नहीं साम्मिलित किए जाते हैं, जो दृष्टि, श्रवण या गामक विकालांगता, संवेगात्मक विक्षोभ, मानसिक मंदता, सांस्कृतिक या आर्थिक दोष के परिणामत: अधिगम संबंधी समस्या से पीड़ित है।" (फेडरल रजिस्टर, 1977)

वर्ष 1994 में अमेरिका की अधिगम अक्षमता की राष्ट्रीय संयुक्त समिति (द नेशनल ज्वायंट कमीटी ऑन लर्निंग डिसएबलिटिज्स) ने अधिगम अक्षमता को परिभाषित करते हुए कहा कि "अधिगम अक्षमता एक सामान्य पद है, जो मानव में अनुमानत: केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र के सुचारु रुप से नहीं कार्य करने के कारण उत्पन्न आंतरिक विकृतियों के विषम समूह, जिसमें की बोलने, सुनने, पढ़ने, लिखने, तर्क करने या गणितीय क्षमता के प्रयोग में कठिनाई शामिल होते हैं, को दर्शाता है। जीवन के किसी भी पड़ाव पर यह उत्पन हो सकता है। हालाँकि अधिगम अक्षमता अन्य प्रकार की अक्षमताओं (जैसे कि संवेदी अक्षमता, मानसिक मंदता, गंभीर संवेगात्मक विक्षोभ) या सांस्कृतिक भिन्नता, अनुपयुक्तता या अपर्याप्त अनुदेशन के प्रभाव के कारण होता है लेकिन ये दशाएँ अधिगम अक्षमता को प्रत्यक्षत: प्रभावित नहीं करती हैं" (द नेशनल ज्वायंट कमीटी ऑन लर्निंग डिसएबलिटिज्स-1994) .

उपर्युक्त परिभाषाओं की समीक्षा के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अधिगम अक्षमता एक व्यापक संप्रत्यय है, जिसके अंतर्गत वाक्, भाषा, पठन, लेखन, एवं अंकगणितीय प्रक्रियाओं में से एक या अधिक के प्रयोग में शामिल एक या अधिक मूल मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया में विकृति को शामिल किया जाता है, जो अनुमानत: केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र के सुचारू रुप से नहीं कार्य करने के कारण उत्पन्न होता है। यह स्वभाव से आंतरिक होता है।

22.3.2 ऐतिहासिक परिदृश्य

अधिगम अक्षमता के इतिहास पर दृष्टिपात करने से आप पाएँगे कि इस पद ने अपना वर्तमान स्वरुप ग्रहण करने के लिए एक लंबा सफर तय किया है। इस पद का सर्वप्रथम प्रयोग 1963 ई. में सैमुअल किर्क ने किया था। यही पद आज सार्वभौम एवं सर्वमान्य है। इसके पूर्व विद्वानों ने अपने-अपने कार्यक्षेत्र के आधार पर अनेक नामकरण किए थे। जैसे- न्यूनतम मस्तिष्क क्षतिग्रस्तता (औषधि विज्ञानियों या चिकित्सा विज्ञानियों द्वारा), मनोस्नायुजनित विकलांगता (मनोवैज्ञानिकों + स्नायुवैज्ञानिकों द्वारा), अतिक्रियाशीलता (मनोवैज्ञानिकों द्वारा) ,न्यूनतम उपलब्धता (शिक्षा मनोवैज्ञानिकों द्वारा) आदि।

रेड्डी, रमार एवं कुशमा (2003) ने अधिगम अक्षमता के क्षेत्र के विकास को तीन निम्नलिखित चरणों में विभाजित किया है-

- प्रारम्भिक (Foundation) काल
- रूपान्तरण (Transition) काल

- स्थापन (Recognition) काल

प्रारम्भिक काल- यह काल अधिगम अक्षमता के उदभव से सम्बन्धित है। वर्ष 1802 से 1946 के मध्य का यह समय अधिगम अक्षमता के लिए कार्यकारी साबित हुआ। अधिगम अक्षमता प्रत्यय की पहचान एवं विकास इसी समय से आरम्भ हुई तथा उनकी पहचान तथा उपयुक्त निराकरण हेतु प्रयास किए जाने लगे।

रूपान्तरण काल - यह काल अधिगम अक्षमता के क्षेत्र में एक नये रूपान्तरण का काल के रूप में जाना जाता है। जब अधिगम अक्षमता एक विशेष अक्षमता के रूप में स्थापित हुई तथा जब अधिगम अक्षमता प्रत्यय का उद्भव हुआ, इन दोनों के मध्य का संक्रमण का काल ही रूपान्तरण काल से सम्बन्धित है।

स्थापन काल - 60 के दशक के मध्य में अधिगम अक्षमता से सम्बन्धित कठिनाईयों को सामूहिक रूप से पहचान की प्राप्ति हुइ्र्र। इस काल में ही सैमुअल किर्क ने 1963 में अधिगम अक्षमता (Learning Disability) शब्द को प्रतिपादित किया । 60 के दशक के बाद इस क्षेत्र में अनेक विकासात्मक कार्य किए गये और विशिष्ट शिक्षा में अधिगम अक्षमता एक बड़े उपक्षेत्र के रूप में प्रतिस्थापित हुई।

क्रुकशैंक ने 1972 में 40 शब्दों का एक शब्दकोष विकसित किया। इसी क्रम में यदि आप कुर्त गोल्डस्टिन द्वारा 1927 ई0 1936 ई0 एवं 1939 ई0 में किए गए कार्यो का मूल्यांकन करें तो आप पाएँगे कि उनके द्वारा वैसे मस्तिष्कीय क्षतिग्रस्त सैनिकों जो प्रथम विश्वयुद्ध में कार्यरत थे की अधिगम समस्याओं का जो उल्लेख किया गया है, वही अधिगम अक्षमता का आधार स्तम्भ है. उनके अनुसार, “ ऐसे लोगों से अनुक्रिया प्राप्त करने में अधिक प्रत्यन करना पड़ता है। इनमें आकृति पृष्ठभूमि भ्रम बना रहता है, ये अतिक्रियाशील होते हैं तथा इनकी क्रियाएँ उत्तेजनात्मक होती हैं।” सट्रॉस (1939) ने अपने अध्ययन में कुछ लक्षण बताए थे जो मूलत: अधिगम अक्षम बालकों एवं किशोरों में मिलते हैं। क्रुकशैंक, वाइस और वैलेन (1957) ने अपने अधिगम अक्षमता संबंधी अध्ययन में केवल वैसे बालकों पर बल दिया जो बुद्धिलब्धि परीक्षण पर सामान्य से कम बुद्धिलब्धि रखते थे। उन्होंने कहा कि यदि किसी बालक की बुद्धिलब्धि न्यून है और साथ ही न्यूनतम शैक्षिक योग्यता प्राप्त करता है तो उसकी शैक्षिक योग्यता की न्यूनता का कारण बुद्धिलब्धि की न्यूनता ही है। इन अध्ययनों को सैमुअल किर्क ने अपने अध्ययन का आधार बनया और कहा कि अधिगम अक्षमता सिर्फ शैक्षिक न्यूनता नहीं है। यह न्यूनतम मस्तिष्कीय क्षतिग्रस्तता, पढ़ने की दक्षता में समस्या अतिक्रियाशीलता आदि जैसे गुणों का समूह है। उन्होंने ये भी कहा जो बालक इन सारे गुणों से संयुक्त रुप से पीड़ित है, वो अधिगम अक्षम बालक है। शैक्षिक न्यून बालकों के संबंध में अपने मत को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि अधिगम

अक्षम बालक शैक्षिक न्यूनता से पीड़ित होगा और यह न्यूनता उसके आंतरिक एवं वाह्य दशाओं के परिणाम के कारण ही नहीं बल्कि उसमें उपलब्ध न्यूनतम शैक्षिक दशाओं के कारण भी संभव है। सैमुअल किर्क ने इस कार्य को और प्रसारित करने के लिए अधिगम अक्षमता अध्ययनकर्ताओं का एक संघ बनाया जिसे "एसोसिएशन फॉर चिल्ड्रेन विद लर्निंग डिसएबलिटी" कहा गया और अधिगम अक्षमता शोध पत्रिका का प्रारंभ किया। आज विश्व स्तर पर अधिगम अक्षमता संबंधी अध्ययन किए जा रहे है और अधिगम अक्षमता पर आधारित दो विश्वस्तरीय शोध पत्रिकाएँ मौजूद हैं जो किए जा रहे अध्ययनों का प्रचार- प्रसार करने में अपनी भूमिका निभा रही हैं।

भारत में इस संबंध में कार्य शुरु हुए अभी बहुत कम समय हुया है और आज यह पश्चिमी देशों में अधिगम अक्षमता संबंधी हो रहे कार्यों के तुलनीय है। भारत वर्ष में अधिगम अक्षम बालकों की पहचान विदेशियों द्वारा की गई लेकिन धीरे-धीरे भारतीयों में भी जागरुकता बढ़ रही है। वर्तमान में भारत में सरकरी और गैर- सरकारी संस्थाएँ इस क्षेत्र में कार्यरत हैं। लेकिन, आज भी अधिगम अक्षमता को भारत में कानूनी विकलांगता के रूप में पहचान नहीं मिली है। नि:शक्त जन (समान अवसर, अधिकार संरक्षण, और पूर्ण भागीदारी) अधिनियम, 1995 में उल्लेखित सात प्रकार की विकलांगता में यह शामिल नहीं है। ज्ञात हो कि यही अधिनियम भारतवर्ष में विकलांगता के क्षेत्र में सबसे वृहद कानून है। अर्थात् भारत में अधिगम अक्षम बालक को कानूनी रुप से विशिष्ट सेवा पाने का आधार नहीं है।

22.3.3 अधिगम अक्षमता की प्रकृति एवं विशेषताएँ

अधिगम संबंधी कठिनाई, श्रवण, दृष्टि, स्वास्थ, वाक् एवं संवेग आदि से संबंधित अस्थायी समस्याओं से जुड़ी होती है। समस्या का समाधान होते ही अधिगम संबंधी वह कठिनाई समाप्त हो जाती है। इसके विपरीत अधिगम अक्षमता उस स्थिति को कहते हैं जहाँ व्यक्ति की योग्यता एवं उपलब्धि में एक स्पष्ट अंतर हो। यह अंतर संभवत: स्नायुजनित होता है तथा यह व्यक्ति विशेष में आजीवन उपस्थित रहता है।

चूँकि अधिगम अक्षमता को कानूनी मन्यता प्राप्त नहीं है और जनगणना में अधिगम अक्षमता को आधार नहीं बनाया जाता है। इसलिए देश में मौजूद अधिगम अक्षम बालकों के संबंध में ठीक-ठीक आँकड़ा प्रदान करना तो अति मुश्किल है लेकिन एक अनुमान के अनुसार यह कहा जा सकता है कि देश में इस प्रकार के बालकों की संख्या अन्य प्रकार के विकलांग बालकों की संख्या से से कहीं ज़्यादा है। यह संख्या, देश में उपलब्ध कुल स्कूली जनसंख्या के 1-

41 प्रतिशत तक ही सकता है। सन् 2012 में चेन्नई में समावेशी शिक्षा एवं व्यावसायिक विकल्प विषय पर सम्पन्न हुए एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन "लर्न 2012" में विशेषज्ञों ने कहा कि भारत में लगभग 10% बालक अधिगम अक्षम हैं। (टाइम्स आफ इंडिया, जनवरी 27, 2012).

अधिगम अक्षमता की विभिन्न मान्यताओं पर दृष्टिपात करने से अधिगम अक्षमता की प्रकृति के संबंध में आपको निम्नलिखित बातें दृष्टिगोचर होंगी:

1. अधिगम अक्षमता आंतरिक होती है;
2. यह स्थायी स्वरुप का होता है अर्थात यह व्यक्ति विशेष में आजीवन विद्यमान रहता है;
3. यह कोई एक विकृति नहीं बल्कि विकृतियों का एक विषम समूह है;
4. इस समस्या से ग्रसित व्यक्तियों में कई प्रकार के व्यवहार और विशेषताएँ पाई जाती हैं;
5. चूँकि यह समस्या केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र की कार्यविरुपता से संबंधित है, अतः यह एक जैविक समस्या है;
6. यह अन्य प्रकार की विकृतियों के साथ हो सकता है, जैसे- अधिगम अक्षमता और संवेगात्मक विक्षोभ; तथा
7. यह श्रवण, सोच, वाक्, पठन, लेखन एवं अंकगणितीय गणना में शामिल मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया में विकृति के फलस्वरुप उत्पन्न होता है, अतः यह एक मनोवैज्ञानिक समस्या भी है।

अधिगम अक्षमता के प्रकृत्ति को चित्र संख्या एक के माध्यम से समझा जा सकता हैः

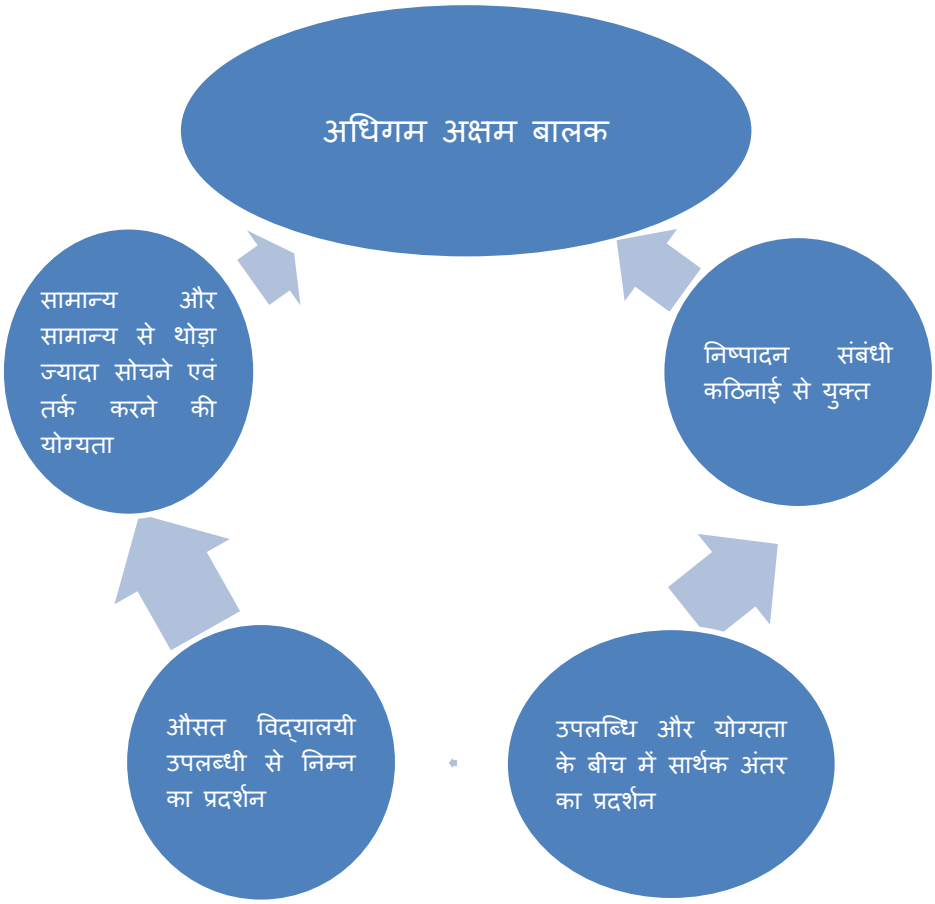

अधिगम अक्षमता के लक्षण को आप अधिगम अक्षम बालकों की विशेषताओं के संदर्भ में समझ सकते हैं। उपरोक्त मुख्य लक्षणों के अतिरिक्त कुछ अन्य लक्षण भी प्रदर्शित कर सकते हैं, जो निम्नलिखित है:

- बिना सोचे-विचारे कार्य करना;
- उपयुक्त आचरण नहीं करना;
- निर्णयात्मक क्षमता का अभाव ;
- स्वयं के प्रति लापरवाही;
- लक्ष्य से आसानी से विचलित होना;
- सामान्य ध्वनियों एवं दृश्यों के प्रति आकर्षण;

- ध्यान कम केन्द्रित करना या ध्यान का भटकाव;
- भावत्मक अस्थिरता;
- एक ही स्थिति में शांत एवं स्थिर रहने की असमर्थता;
- स्वप्रगति के प्रति लापरवाही बरतना;
- सामान्य से ज्यादा सक्रियता;
- गामक क्रियाओं में बाघा;
- कार्य करने की मंद गति;
- सामान्य कार्य को संपादित करने के लिए भी एक से अधिक बार प्रयास करना;
- पाठ्य सहगामी क्रियाओं में शामिल नहीं होना;
- क्षीण स्मरण शक्ति का होना;
- बिना वाह्य हस्तक्षेप के अन्य गतिविधियों में भाग लेने में असमर्थ होना; तथा
- प्रत्यक्षीकरण सम्बन्धी दोष।

अभ्यास प्रश्न 1
टिप्पणी: इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उतार मिलाइए रिक्त स्थान की पूर्ति करें :
(अ) 'अधिगम अक्षमता' पद का सर्वप्रथम प्रयोग ..... ने किया था. (ब) अमेरिका में अधिगम अक्षमता के फेडरल परिभाषा का विकास वर्ष..... में हुआ था. (स) ..... ने सन 1972 में 'अधिगम अक्षमता' संबंधी 40 शब्दों का एक शब्दकोष विकसित किया था. (द) 'एसोसिएशन फॉर चिल्ड्रेन विद लर्निंग डिसएबलिटि' का गठन ..... ने किया था.☐ ☐

22.4 अधिगम अक्षमता का वर्गीकरण

अधिगम अक्षमता एक वृहद् प्रकार के को कई आधारों पर विभेदीकृत किया गया है। ये सारे विभेदीकरण अपने उद्देश्यों के अनुकूल हैं। इसका प्रमुख विभेदीकरण ब्रिटिश कोलंबिया (2011) एवं ब्रिटेन के शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रकाशित पुस्तक सपोर्टिंग स्टुडेंटस विद लर्निंग डिसएबलिटिः ए गाइड फॉर टीचर्स में दिया गया है, जो निम्नलिखित है:

1. डिस्लेक्सिया (पढ़ने संबंधी विकार);

2. डिस्ग्राफिया (लेखन संबंधी विकार);

3. डिस्कैलकुलिया (गणितीय कौशल संबंधी विकार);

4. डिस्फैसिया (वाक् क्षमता संबंधी विकार);

5. डिस्प्रैक्सिया (लेखन एवं चित्रांकन संबंधी विकार);

6. डिसऑर्थोग्राफिया (वर्तनी संबंधी विकार);

7. ऑडिटरी प्रोसेशिंग डिसआर्डर (श्रवण संबंधी विकार);

8. विजुअल परसेप्शन डिसआर्डर (दृश्य प्रत्यक्षण क्षमता संबंधी विकार);

9. सेंसरी इंटिग्रेशन ऑर प्रोसेसिंग डिसआर्डर (इन्द्रीय समन्वयन क्षमता संबंधी विकार); तथा

10. ऑर्गनाइजेशनल लर्निंग डिसआर्डर (संगठनात्मक पठन संबंधी विकार)

अब आप बारी-बारी से एक-एक का अध्ययन करेंगे।

1.4.1 डिस्लेक्सिया

डिस्लेक्सिया शब्द ग्रीक भाषा के दो शब्द "डस" और "लेक्सिस" से मिलकर बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है "कठिन भाषा(डिफिकल्ट स्पीच)" । वर्ष 1887 में एक जर्मन नेत्र रोग विशेषज्ञ रुडोल्फ बर्लिन द्वारा खोजे गए इस शब्द को "शब्द अंधता" भी कहा जाता है। डिस्लेक्सिया को भाषायी और सांकेतिक कोडों भाषा के ध्वनियों का प्रतिनिधित्व करने वाले वर्णमाला के अक्षरों या संख्याओं का प्रतिनिधित्व कर रहे अंकों के संसाधान में होनेवाली कठिनाई के रुप में परिभाषित किया जाता है। यह भाषा के लिखित रुप, मौखिक रुप एवं भाषायी दक्षता को प्रभावित करता है। यह अधिगम अक्षमता का सबसे सामान्य प्रकार है।

डिस्लेक्सिया के लक्षण: - इसके निम्नलिखित लक्षण है:

1. वर्णमाला अधिगम में कठिनाई;

2. अक्षरों की ध्वनियों को सीखने में कठिनाई;

3. एकाग्रता में कठिनाई;

4. पढ़ते समय स्वर वर्णों का लोप होना;

5. शब्दों को उलटा या अक्षरों का क्रम इधर-उधर कर पढ़ा जाना, जैसे- नाम को मान या शावक को शाक पढ़ा जाना;

6. वर्तनी दोष से पीड़ित होना;

7. समान उच्चारण वाले ध्वनियों को न पहचान पाना;

8. शब्दकोष का अभाव;

9. भाषा के अर्थपूर्ण प्रयोग का अभाव; तथा

10. क्षीण स्मरण शक्ति।

डिस्लेक्सिया की पहचान- उपर्युक्त लक्षण हालाँकि डिस्लेक्सिया की पहचान करने में उपयोगी होते हैं लेकिन इन लक्षणों के आधार पर पूर्णतः विश्वास के साथ किसी भी व्यक्ति को डिस्लेक्सिक घोषित नहीं किया जा सकता है। डिस्लेक्सिया की पहचान करने के लिए सन् 1973 में अमेरिकन फ़िजिशियन एलेना बोडर ने "बोड टेस्ट ऑफ रीडिंग-स्पेलिंग पैर्टन" नामक एक परीक्षण का विकास किया। भारत में इसके लिए "डिस्लेक्सिया अर्ली स्क्रीनिंग टेस्ट" और "डिस्लेक्सिया स्क्रीनिंग टेस्ट" का प्रयोग किया जाता है।

डिस्लेक्सिया का उपचार- डिस्लेक्सिया का पूर्ण उपचार असंभव है लेकिन इसको उचित शिक्षण-अधिगम पद्धति के द्वारा निम्नतम स्तर पर लाया जा सकता है।

1.4.2 डिस्ग्राफिया

"डिस्ग्राफिया अधिगम अक्षमता का वो प्रकार है जो लेखन क्षमता को प्रभावित करता है। यह वर्तनी संबंधी कठिनाई, खराब हस्तलेखन एवं अपने विचारों को लिपिबद्ध करने में कठिनाई के रुप में जाना जाता है"। (नेशनल सेंटर फॉर लर्निंग डिसएबलिटिज्स, 2006).

डिस्ग्राफिया के लक्षण- इसके निम्नलिखित लक्षण है:

1. लिखते समय स्वयं से बातें करना;

2. अशुद्ध वर्तनी एवं अनियमित रुप और आकार वाले अक्षर को लिखना;

3. पठनीय होने पर भी कॉपी करने में अत्यधिक श्रम का प्रयोग करना;

4. लेखन सामग्री पर कमजोर पकड़ या लेखन सामग्री को कागज के बहुत नजदीक पकड़ना;

5. अपठनीय हस्तलेखन;

6. लाइनों का ऊपर-नीचे लिखा जाना एवं शब्दों के बीच अनियमित स्थान छोड़ना; तथा

7. अपूर्ण अक्षर या शब्द लिखना।

उपचारात्मक कार्यक्रम- चूँकि यह एक लेखन संबंधी विकार है, अतः, इसके उपचार के लिए यह आवश्यक है कि इस अधिगम अक्षमता से ग्रसित व्यक्ति को लेखन का ज्यादा से ज्यादा अभ्यास कराया जाय।

1.4.3 डिस्कैलकुलिया

यह एक व्यापक पद है जिसका प्रयोग गणितीय कौशल अक्षमता के लिए किया जाता है। इसके अंतर्गत अंकों संख्याओं के अर्थ समझने की अयोग्यता से लेकर अंकगणितीय समस्याओं के समाधान में सूत्रों एवं सिद्धांतों के प्रयोग की अयोग्यता तथा सभी प्रकार के गणितीय कौशल अक्षमता शामिल है।

डिस्कैलकुलिया के लक्षण – इसके निम्नलिखित लक्षण है :

1. नाम एवं चेहरा पहचानने में कठिनाई;

2. अंकगणितीय संक्रियाओं के चिन्हों को समझने में कठिनाई;

3. अंकगणितीय संक्रियाओं के अशुद्ध परिणाम मिलना;

4. गिनने के लिए ऊँगलियओँ का प्रयोग ;

5. वित्तीय योजना या बजट बनाने में कठिनाई;

6. चेकबूक के प्रयोग में कठिनाई;

7. दिशा ज्ञान का अभाव या अल्प समझ;

8. नकद अंतरण या भुगतान से डर; तथा

9. समय की अनुपयुक्त समझ के कारण समय-सारणी बनाने में कठिनाई का अनुभव करना।

डिस्कैलकुलिया के कारण- इसका कारण मस्तिष्क में उपस्थित कार्टेक्स की कार्यविरुपता को माना जाता है। कभी-कभी तार्किक चिंतन क्षमता के अभाव के कारण या कार्यकारी स्मृति के अभाव के कारण भी डिस्ग्राफिया उत्पन्न होता है।

डिस्कैलकुलिया का उपचार- उचित शिक्षण-अधिगम रणनीति अपनाकर डिस्कैलकुकलिया को कम किया जा सकता है। कुछ प्रमुख रणनीतियाँ निम्नलिखित है:

1. जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से संबंधित उदाहरण प्रस्तुत करना;

2. गणितीय तथ्यों को याद करने की लिए अतिरिक्त समय प्रदान करना;

3. फ्लैश कार्ड्स और कम्पुटर गेम्स का प्रयोग करना; तथा

4. गणित को सरल करना और यह बताना कि यह एक कौशल है जिसे अर्जित किया जा सकता है।

1.4.4 डिस्फैसिया

ग्रीक भाषा के दो शब्दों "डिस" और "फासिया" जिनके शाब्दिक अर्थ क्रमशः "अक्षमता" एवं "वाक्" होते हैं से मिलकर बने शब्द डिस्फैसिया का शाब्दिक अर्थ वाक् अक्षमता से है। यह एक भाषा एवं वाक् संबंधी विकृती है जिससे ग्रसित बच्चे विचार की अभिव्यक्ति या व्याखान के समय कठिनाई महसूस करते हैं। इस अक्षमता के लिए मुख्य रुप से मस्तिष्क क्षति (ब्रेन डैमेज) को उत्तरदायी माना जाता है।

1.4.5 डिस्प्रैक्सिया

यह मुख्य रुप से चित्रांकन संबंधी अक्षमता की ओर संकेत करता है। इससे ग्रसित बच्चे लिखने एवं चित्र बनाने में कठिनाई महसूस करते हैं।

अभ्यास प्रश्न 2 (टिप्पणी : इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से अपने उत्तर मिलाइए)	
समूह क	**समूह ख**
1.) डिस्लेक्सिया	अ. गणितीय कौशल संबंधी विकार

2.) डिस्ग्राफिया	ब. लेखन संबंधी विकार
3.) डिस्कैलकुलिया	स. लेखन एवं चित्रांकन संबंधी विकार
4.) डिस्प्रैसिया	द. पठन संबंधी विकार
5.) डिस्फासिया	य. वाक् सबंधी विकार

22.5 अधिगम अक्षमता और अन्य विकलांगता

1.5.1 अधिगम अक्षमता और मानसिक मंदता

"अधिगम अक्षमता" और "मानसिक मंदता" पद एक सामान्य आदमी की भाषा में एक-दूसरे के पर्याय हैं और भ्रमवश वे दोनों पदों का एक ही अर्थ में प्रयोग करते हैं। यह सर्वथा गलत है। अधिगम अक्षमता और मानसिक मंदता में स्पष्ट अंतर है जिन्हें आप उनकी परिभाषाओं के माध्यम से समझ सकेंगे।

" अधिगम अक्षमता " को लिखित या मौखिक भाषा के प्रयोग में शामिल किसी एक या अधिक मनिवैज्ञानिक प्रक्रियाओं में कार्यविरुपता के रुप में परिभाषित किया जा सकता है जबकि मानसिक मंदता को मानसिक विकास की ऐसी अवस्था के रुप में परिभाषित किया जाता है जिसमें बच्चों का बौद्धिक विकास औसत बुद्धि वाले बालकों से कम होता है। इस अंतर को आप निम्नलिखित तालिका के माध्यम से आप और स्पष्ट कर सकते हैं:

अधिगम अक्षमता	मानसिक मंदता
1. औसत या औसत से ज्यादा बुद्धिलब्धि प्राप्तांक	बुद्धिलब्धि प्राप्तांक 70 या उससे कम
2. मस्तिष्क की सामान्य कार्य-प्रणाली बाधित नहीं होती है या औसत होती है	मस्तिष्क की सामान्य कार्य-प्राणाली औसत से कम
3. योग्यता और उपलब्धि में स्पष्ट अंतर	दैनिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में पूर्णतः

	अक्षम या कठिनाई का सामना
4. अधिगम अक्षम व्यक्ति मानसिक मंदता से ग्रसित हो यह आवश्यक नहीं है.	मानसिक मंद व्यक्ति आवश्यक रुप से अधिगम अक्षमता से ग्रसित होते हैं.
5. यह किसी में भी हो सकता है.	यह महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में ज्यादा पाई जाती है.

1.5.2 अधिगम अक्षमता और स्लो लर्नर्स व पिछड़े बालक

अधिगम अक्षमता पद भ्रमवश स्लो लर्नर्स बालकों के लिए भी सामान्यतः प्रयोग किया जाता है। वर्तमान परिदृश्य में भी एक बहुत बड़ी जनसंख्या इन दोनों पदों का प्रयोग एक ही अर्थ में करती है। यह इन दोनों ही पदों का अनुपयुक्त प्रयोग है। दोनों पद एक दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं। दोनों पदों के बीच स्पष्ट खींचीं विभाजन रेखा को आप इनकी परिभषाओं के माध्यम से स्पष्ट कर सकते हैं।

एक स्लो लर्नर्स औसत से कम बुद्धि का बालक होता है जिसके सोचने की क्षमता, उस आयु समूह के बालकों के लिए निश्चित किए गए मानदण्ड से कम होता है। ऐसे बालक विकास की सभी अवस्थाओं से गुजरते हैं जो उसके लिए है लेकिन उस आयु समूह के सामान्य बालकों की तुलना में सार्थक रुप से धीमी गति से जबकि एक अधिगम अक्षम बालक औसत या औसत से ज्यादा बुद्धिवाला होता है जिसे कुछ विशिष्ट समस्याएँ होती हैं जो अधिगम को बहुत कठिन बना देती हैं। इस प्रकार अधिगम अक्षमता स्लो लर्निंग से भिन्न संप्रत्यय है।

"पीछड़े बालक" पद एक सापेक्ष पद है जिसकी व्याख्या शिक्षा, आर्थिक स्थिति, मानसिक स्थिति, सामाजिक स्थिति आदि के संदर्भ में की जाती है। यहाँ हम शिक्षा के संदर्भ में इसकी व्याख्या करेंगे। शिक्षा के संदर्भ में यह बालकों के एक विशिष्ट वर्ग को इंगित करता है जो किसी भी कारणवश अपने उम्र के अन्य बालकों से कम निष्पादन करते हैं। वो मानसिक मंदता से ग्रसित हो सकते हैं या अधिगम अक्षमता से या फिर कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण पीछड़े हो सकते है। ये सब पिछड़े हुए बालक कहे जाएँगे।

अधिगम अक्षमता के संदर्भ में इसका अध्ययन करने पर आप पाएँगे कि " अधिगम अक्षमता " पद इसकी तुलना में एक संकीर्ण पद है। पिछड़े बालक पद एक अति व्यापक पद है। ये दोनों पद एक-दूसरे के पर्याय नहीं हैं बल्कि

ये एक-दूसरे से सार्थक रुप से भिन्न हैं। अधिगम अक्षमता और शैक्षिक रुप से पिछड़े बालक के मध्य अंतर को आप तालिका 2 के माध्यम से और स्पष्ट रुप से समझ सकेंगे।

22.6 सारांश

प्रस्तुत ईकाई में हमने अधिगम अक्षमता के अर्थ, प्रकृति, लक्षण आदि पर चर्चा की और इस पर भी विवेचन किया है कि अधिगम संबंधी कठिनाई से अधिगम अक्षमता किस प्रकार अलग है। हमने अधिगम क्षमता के विभिन्न प्रकार, उनके लक्षण, कारण, उपचार एवं उनसे प्रभावित होनेवाले कौशलों की भी चर्चा की है। अधिगम अक्षमता के इतिहास एवं इसके प्रसार को भी स्पष्ट किया है। अधिगम अक्षमता का अन्य प्रकार की अक्षमताओं से जैसे मानसिक मंदता, स्लो लर्निंग, शैक्षिक पिछड़ापन आदि से अंतर को भी इस ईकाई में स्पष्ट किया गया है।

आज शिक्षा सबका अधिकार है। ऐसे में अधिगम अक्षम बालकों की पहचान एवं उनके अनुकूल उन्हें शिक्षा प्रदान करना हर शिक्षण संस्था का पुनीत कार्य है।

22.7 शब्दावली

डिस्लेक्सिया	पढ़ने संबंधी विकार
डिस्ग्राफिया	लेखन संबंधी विकार
डिस्कैलकुलिया	गणितीय कौशल संबंधी विकार
डिस्फैसिया	वाक् क्षमता संबंधी विकार
डिस्प्रैक्सिया	लेखन एवं चित्रांकन संबंधी विकार
डिसऑर्थोग्राफिया	वर्तनी संबंधी विकार
ऑडिटरी प्रोसेशिंग डिसआर्डर	श्रवण संबंधी विकार
विजुअल परसेप्शन डिसआर्डर	दृश्य प्रत्यक्षण क्षमता संबंधी विकार

सेंसरी-इंटिग्रेशन व प्रोसेशिंग डिसआर्डर	इन्द्रीय समन्वयन क्षमता संबंधी विकार
ऑर्गनाइजेशनल लर्निंग डिसआर्डर	संगठनात्मक पठन संबंधी विकार

22.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. (अ) सैमुअल किर्क

(ब) 1977

(स) क्रुकशैंक

(द) सैमुअल किर्क

2. (1) द

(2) ब

(3) अ

(4) स

(5) य

22.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

Aro, T., Jere-Folotiya, J., Hengari, J., Kariuki, D. & Mkandawire, L. (2011). Learning and Learning Disabilities. In T. Aro & T. Ahonen (Eds.), Assessment of learning disablity: cooperation between Teachers, Psychologists and Parents.

Bhargava, M. (1998). विशिष्ट बालक: उनकी शिक्षा एवं पुनर्वास. New Delhi : Sterling Publishers Pvt. Ltd.

British Coulumbia (2011). Supporting Students with Learning Disabilities Aguide for Teachers retrived from www.bced.gov.bc.ca/specialed/ppandg.htm.

Kirk, S. A. (1970). Educating Exceptional Children. New Delhi : Oxford and IBH Publishing Co.

National Centre for Learning Disabilities (2006). Retrived from www.ldonline.org.

National Joint Committee on Learning Disabilities. (1994). Secondary to Postsecondary transition planning for students with learning disabilities.

Reddy, G.L., Ramar, R. & Kusuma, A. (2003). Learning Disabilities: A practical guide to practitioners. New Delhi: Discovery Publishing House

Times of India (Jan 27, 2012). 10% of kids in India have learning disability: Experts TNN Jan 27, 2012. Retrived from http://articles.timesofindia.indiatimes.com/2012-01-27/chennai/30669918_1_inclusive-education-disability-autism

United States Office of Education. (1977) Definition and criteria for defining students as learning disabled. Federal Register, (1977) 42:250, Washington, DC: U.S. Government Printing Office.

University of Guelph. (2000). A Handbook for Faculty on Learning Disabilities Issues. Guelph, Canada

22.10 सहायक /उपयोगी ग्रंथ

Bhargava, M. (1998). Introduction to Exceptional Children, Their Nature and Educational Provisions. New Delhi : Sterling Publishers Pvt. Ltd.

Reddy, G.L., Ramar, R. & Kusuma, A. (2003). Learning Disabilities: A practical guide to practitioners. New Delhi: Discovery Publishing House

Smith, T. E. C., Pollway, E.A., Patton, J.R. & Dowdy, C.A. (2011). Teaching students with disabilities special needs in inclusive needs in inclusive settings. New Delhi: PHI Learning Private Limited.

http://www.ldonline.org/ldresources

http://www.washington.edu/doit/Faculty/Strategies/Disability/LD/ld_resources.html

22.11 निबंधात्मक प्रश्न

I. अधिगम अक्षमता शब्द की परिभाषा दीजिए एवं अधिगम अक्षमता के ऐतिहासिक परिदृश्य का वर्णन कीजिए ।

II. अधिगम अक्षमता की प्रकृति का उल्लेख करें।

III. अधिगम अक्षमता एवं मानसिक मंदता में अंतर स्पष्ट करें।

IV. अधिगम अक्षमता एवं स्लो लर्नर्स में अंतर स्पष्ट करें।

V. अधिगम अक्षमता के विभिन्न प्रकारों का संक्षिप्त वर्णन करें।